अनुबद्ध केवली विधान

-रचयित्री-

गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 489

अनुबद्ध केवली विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि मांगीतुंगी तीर्थ पर 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक के पावन प्रसंग में सप्तम पट्टाचार्य श्री अनेकांत सागर जी महाराज ससंघ 27 पीछीधारी साधुओं के सान्निध्य में दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 83वें जन्मजयंती दिवस आश्विन शु. पूर्णिमा (16 अक्टूबर 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2516, आश्विन शु. पूर्णिमा	मूल्य
1100 प्रतियाँ	16 अक्टूबर 2016, शरदपूर्णिमा	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान समय में देखते हैं कि जब हर संसारी प्राणी दिन-रात अपने सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिये तन-मन से पूर्णरूपेण धनवृद्धि के लिये प्रयासरत रहता है। वहाँ उनके पास कुछ समय भी धर्म कार्यों के लिये शेष नहीं है। हर समय भोगोपभोग की सामग्री को एकत्र करने में ही उनका ध्यान रहता है। कई जन्मों के पुण्य उदय से ही मनुष्य का जिनधर्म एवं जिनवाणी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। जीव के शुभ-अशुभ भाव ही उसे तदनुसार फल देने वाले होते हैं। श्रावकों के लिये षट् आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी कहे गये हैं। जिनमें अनेक पूजा-विधानों को करके भगवान की भक्ति करने का अवसर मिल जाता है और फिर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखी पूजाओं को करने से तो "एक पंथ दो काज" वाली सूक्ति चरितार्थ हो जाती है यानि भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। अनेक छोटे बड़े विधान पू. माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं और निरंतर यह क्रम जारी है। उसी क्रम में "अनुबद्ध केवली विधान" नामक यह पुस्तक भी ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित होकर आप तक पहुँच रही है। यह विधान आप सबके लिये मंगल प्रदान करने वाला हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

अनादिकाल से जैनधर्म में यह परम्परा चली आई है कि चतुर्थकाल में चौबीस तीर्थंकरों के समवसरण में बारह सभा में गणधर आदि मुनि होते रहे हैं। जो तीर्थंकर के निकट में व्रत दीक्षादि ग्रहण करते हैं वे ही गणधर पद को प्राप्त करते हैं। और जिस दिन तीर्थंकर का निर्वाण होता है उस दिन कोई न कोई मुनि केवलज्ञान को प्राप्त कर लेते हैं। यह श्रृंखला अनेक मुनियों तक चलती रहती हैं।

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को जिस दिन निर्वाण हुआ उसी दिन सायंकाल को श्री गौतम स्वामी को केवलज्ञान हो गया। और जिस दिन श्री गौतमस्वामी को मोक्ष हुआ उसी दिन श्री सुधर्मास्वामी को केवलज्ञान हो गया और जिस दिन सुधर्मास्वामी को मोक्ष हुआ उसी दिन श्री जम्बूस्वामी को केवलज्ञान हो गया। इस तरह से भगवान महावीर स्वामी के तीर्थ में तीन अनुबद्ध केवली हुए हैं।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी दिव्यशक्ति चारित्रचन्द्रिका युगप्रवर्तिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 400 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। एक शतक विधानों की श्रृंखला में यह **'अनुबद्ध केवली विधान'** एक नूतन विधान है। अनुबद्ध केवली विधान में चौबीस तीर्थंकरों के शिष्यगणों को अर्घ्य चढ़ाया है।

इस विधान में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम संस्कृत में मंगलाचरण किया है। इसके बाद स्वरचित अन्तिम अनुबद्धकेवली जम्बूस्वामी की संस्कृत में एवं उसका पद्यानुवाद सहित स्तुति दी है–

सम्यक् निर्मल असिधाराव्रत, पहले भव में किया मुनीश।
इस भव में रामा में रति नहिं, किया काम से रहित यतीश।।
भरत धरा में जो अंतिम, केवलि है उनको भक्ती से।
त्रिभुवननुत श्रीजंबूस्वामी, का स्तवन करूँ रचि से।।1।।

इसके बाद पूजा नं 1 में समवसरण में स्थित 'चौबीस तीर्थंकर' की पूजा है। पूजा नं. 2 "अनुबद्ध केवली पूजा" में 24 तीर्थंकरों के तीर्थ में अनुबद्ध केवली एवं अपवर्ग-स्वर्ग प्राप्त मुनियों की पूजा है। अनुबद्ध केवली अर्घ्य में 24 तीर्थंकरों के समय में जितने-जितने अनुबद्ध केवली हुए हैं उन सभी को अर्घ्य चढ़ाया है जैसे कि श्री ऋषभदेव से लेकर शीतलनाथ तक 84-84 अनुबद्ध केवली हुए हैं, श्री श्रेयांसनाथ के समय 72, श्री वासुपूज्य के समय 44, श्री विमलनाथ के समय 40, श्री अनंतनाथ के 36, श्री धर्मनाथ के 32, श्री शांतिनाथ के 28, श्री कुंथुनाथ के 24, श्री अरनाथ के 20, श्री मल्लिनाथ के 16, श्री मुनिसुव्रतनाथ के 12, श्री नमिनाथ के 8, श्री नेमिनाथ के 4, श्री पार्श्वनाथ के 3 एवं श्री महावीर स्वामी के समय 3 अनुबद्ध केवली हुए हैं। इन सभी अनुबद्ध केवलियों को इसमें अर्घ्य चढ़ाया है। 24 तीर्थंकरों के समय के ये सभी मिलाकर 1182 अनुबद्ध केवली हैं, यह तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के आधार से हैं। अन्य ग्रंथों में 1370 अनुबद्ध केवली

भी माने हैं। यहाँ पर पूज्य माताजी ने तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के आधार से संख्या ली है।

इसके बाद में 24 तीर्थंकरों के समय में मुक्ति प्राप्त मुनियों के 24 अर्घ्य हैं। इनमें जिन-जिन तीर्थंकरों के समय जितने-जितने मुनि मोक्ष गए हैं उन सभी की संख्या दी है। 24 तीर्थंकरों के तीर्थ में सिद्धपद प्राप्त मुनियों की संख्या चौबीस लाख, चौंसठ हजार, चार सौ आई है। जैसा कि पूज्य माताजी ने पूर्णार्घ्य में लिखा है–

चौबिस लाख चौंसठ सहस, चार शतक परिणाम।
चौबिस जिनके शिष्य शिव, गये जजूँ धर ध्यान।।

इसके बाद 24 तीर्थंकरों के काल में अनुत्तर प्राप्त मुनियों के 24 अर्घ्य हैं। ऊर्ध्वलोक में 16 स्वर्ग, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश के बाद पाँच अनुत्तर हैं। 24 तीर्थंकरों के समय में इन पाँच अनुत्तरों में जन्म लेने वाले मुनियों की संख्या दो लाख, सत्तर हजार, आठ सौ आई है। उन सभी मुनियों को यहाँ पर अर्घ्य चढ़ाया है।

इसके बाद में 24 तीर्थंकरों के काल में सौधर्मादि स्वर्ग से 9 ग्रैवेयक तक प्राप्त किए एक लाख पाँच हजार, आठ सौ मुनियों के अर्घ्य हैं। पुनः 24 तीर्थंकरों के तीर्थकाल में दश दश घोरोपसर्ग विजयि अंतकृतकेवलियों का 1 पूर्णार्घ्य एवं दश दश दारुण उपसर्ग विजयि अनुत्तरौपपादिक मुनियों का 1 पूर्णार्घ्य है। इसके बाद जयमाला है। जयमाला में स्वाध्याय का सार भरा हुआ है।

पूजा नं. 3 **'तीर्थ प्रवर्तन काल'** पूजा में 24 तीर्थंकरों के तीर्थ प्रवर्तन काल में हुए केवली, श्रुतकेवली, आचार्य, उपाध्याय एवं साधुओं के 24 अर्घ्य हैं। पूर्णार्घ्य में पंचमकाल के अंतिम वीरांगज मुनि तक सभी मुनियों को एवं ब्राह्मी गणिनी से लेकर सर्वश्री आर्यिका पर्यंत सभी आर्यिकाओं को अर्घ्य चढ़ाया है। इस पूजा की जयमाला में पूज्य माताजी ने अनुबद्ध केवली, श्रुतकेवली, ग्यारह अंगधारी आदि अनेक मुनियों के नाम बताते हुए अंत में लिखा है कि उत्सर्पिणी के प्रथम तीर्थंकर महापद्मप्रभ, होंगे उन्हें मेरा शत-शत नमन हो।

अंत में प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद में अनुबद्ध केवली विधान की मंगल आरती एवं भजन आदि है। **इस विधान में कुल 3 पूजा , 120 अर्घ्य, 8 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमालाएँ हैं।**

यह विधान करने, कराने वाले सभी भव्यजीवों के लिए मंगलकारी हो और सभी भव्यजीव अपने जीवन में रत्नत्रय को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है। इन्हीं शब्दों के साथ पूज्य माताजी के श्रीचरणों में पुनः पुनः वन्दामि।

卐

हार्दिक उद्गार

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूत कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते।।

बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनकी चर्या चतुर्थकालीन सम मुनियों के समान थी। इनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम पाकर, स्वनाम को सार्थक करते हुए परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करके, ग्रंथों का खूब स्वाध्याय करके, अपने ज्ञान को परिपक्व करके 'सहस्रनाम मंत्र' की रचना से अपनी लेखनी का शुभारम्भ करके अब तक छोटे–बड़े सभी ग्रंथों को मिलाकर 400 ग्रंथों की रचना की है।

आज के वैज्ञानिक युग में पारस टी. वी. चैनल के माध्यम से लोग घर बैठे पूज्य माताजी के मुखारविन्द से प्रतिदिन ज्ञानामृत का पान करते हैं। जब वे हस्तिनापुर आकर पूज्य माताजी का दर्शन करते हैं, तो गद्गद् होकर कहते हैं कि माताजी हम तो आपके शुद्ध शास्त्रीय, आगमानुसार प्रवचन सुनकर धन्य हो गए।

वास्तव में पूज्य माताजी ने भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से निकली द्वादशांग वाणी को जिन्हें पूर्वाचार्यों ने ग्रंथरूप में लिपिबद्ध किया है उसी को आत्मसात करके, जन–जन के हिताय प्रवचन के द्वारा तथा ग्रंथों के द्वारा प्रदान कर रही हैं। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट न्याय के ग्रंथ का अनुवाद करके पूज्य माताजी ने एक महान् कार्य किया है। विद्वद्वर्ग, युवावर्ग, बालवर्ग सभी के लिए पूज्य माताजी ने समयसार, नियमसार की टीका, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज आदि विधान, प्रतिज्ञा, परीक्षा, जीवनदान आदि उपन्यास एवं बालविकास के 4 भाग, जैसी पुस्तकें लिखकर सर्वांगीण ज्ञान का प्रचार प्रसार किया है। विधानों की श्रृंखला में यह 'अनुबद्ध केवली विधान' भी अतिशय चमत्कारिक विधान है।

मेरा परम सौभाग्य है कि पूज्य माताजी की कुल परम्परा में जन्म लेकर, उन्हें गुरुरूप में पाकर और उनसे ज्ञानामृत को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य किया है। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु के प्रति भक्ति को करते हुए अपनी नारी पर्याय को सफल करूँ यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना करते हुए, ज्ञान की भण्डार पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन करती हूँ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र—**गोयल, **नाम—**कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004), भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश रथ-मांगीतुंगी (2015) के रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	जम्बूस्वामी स्तुति	3
3.	चौबीस तीर्थंकर पूजा	6
4.	अनुबद्ध केवली पूजा	10
5.	अनुबद्ध केवली अर्घ्य	12
6.	मुक्ति प्राप्त मुनियों के अर्घ्य	15
7.	अनुत्तर प्राप्त मुनियों के अर्घ्य	19
8.	सौधर्मादि से ग्रैवेयक तक प्राप्त हुए मुनियों के अर्घ्य	23
9.	जयमाला	28
10.	तीर्थ प्रवर्तनकाल पूजा	31
11.	अथ प्रत्येक अर्घ्य (24 अर्घ्य)	33
12.	जयमाला	39
13	प्रशस्ति	43
14.	अनुबद्ध केवली विधान की मंगल आरती	44

मण्डल विधान का नक्शा

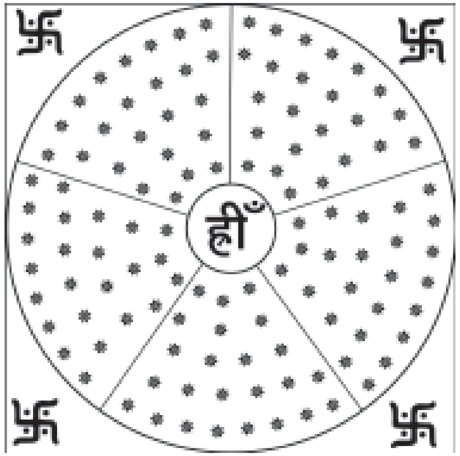

कुल अर्घ्य

प्रथम कोष्ठक में	-24 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठक में	-24 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठक में	-24 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठक में	-24 अर्घ्य
पंचम कोष्ठक में	-24 अर्घ्य

कुल अर्घ्य-120 अर्घ्य

कुल पूजा-3, अर्घ्य-120, पूर्णार्घ्य-8, जयमाला-3

अनुबद्ध केवली विधान

(चौबीस तीर्थंकर के शिष्यगण)

मंगलाचरणं

त्रैलोक्यमंगलात्मानः, सुरासुरनमस्कृताः।
मंगलं मम यच्छन्तु, जितरागादयो जिनाः।।1।।

संसार प्रभवो मोहो, यैर्जितोऽत्यन्तदुर्जयः।
अर्हन्तो भगवन्तस्ते, भवंतु मम मंगलम्।।2।।

करस्थामलकं यद्वल्लोकालोकं स्वतेजसा।
पश्यन्तः केवलालोका, भवन्तु मम मंगलम्।।3।।

कर्मणाष्टप्रकारेण, मुक्तास्त्रैलोक्यमूर्द्धगाः।
सिद्धाः सिद्धिकराः सर्वे, भवन्तु मम मंगलम्।।4।।

कमलादित्यचन्द्रक्ष्मामंदराब्धिवियत्समाः।
आचार्याः परमाधारा, भवन्तु मम मंगलम्।।5।।

परात्मशासनाभिज्ञाः, कृतानुगतशासनाः।
सदा सर्वेऽप्युपाध्यायाः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।6।।

तपसा द्वादशांगेन, निर्वाणं साधयन्ति ये।
ते सर्वे साधवः शूराः भवंतु मम मंगलम्।।7।।

चतुर्विंशतितीर्थेशा–स्तुर्यकाले भवा जिनाः।
भक्त्या नमामि तान्नित्यं, ते मे कुर्वन्तु मंगलम्।।8।।

चतुर्विंशतितीर्थेशां, प्रसिद्धाः शासनेषु ये।
तेऽनुबद्धकेवलिनो, नित्यं कुर्वन्तु मंगलम्।।9।।

शिष्यास्तीर्थकराणां ये, सिद्धिं प्राप्ता मुनीश्वराः।
सर्वसिद्धिप्रदातारस्ते मे कुर्वन्तु मंगलम्।।10।।

अनुत्तरगता अत्र, मुनयो जैनशासने।
मूलोत्तरगुणाढ्यास्ते, नित्यं कुर्वन्तु मंगलम्।।11।।

सौधर्मादिग्रैवेयकान्, प्राप्ता ये संयता अपि।
मूलोत्तरगुणाप्त्यै मे, नित्यं कुर्वन्तु मंगलम्।।12।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जम्बूस्वामी स्तुतिः

(अंतिम अनुबद्धकेवली स्तुति)

–मालिनी छंद–

विहित–विमल–सम्यक्खड्गधाराव्रतः प्राक्।
भव इह न हि कांतासक्तचेता निकामः।।
इह भरतधरायामंतिमः केवली तम्।
त्रिभुवननुतजम्बूस्वामिनं स्तौमि भक्त्या।।1।।

सम्यक् निर्मल असिधाराव्रत, पहले भव में किया मुनीश।
इस भव में रामा में रति नहिं, किया काम से रहित यतीश।।
भरत धरा में जो अंतिम, केवलि हैं उनको भक्ती से।
त्रिभुवननुत श्रीजंबूस्वामी, का स्तवन करूँ रुचि से।।1।।

रतिपतिविजयी त्वं प्रोल्लसज्ज्ञानतेजाः।
त्रिभुवनततमिथ्यात्वांधकारांशुमाली।।
जिनवरमतवार्धे–वर्धनायेन्दुपूर्णः ।
भविकुमुदविकासी च श्रये त्वां मुनीन्द्र!।।2।।

रतिपतिविजयी विलसत ज्ञान, पुंजमय तेजस्वी तुम हो।
त्रिभुवन के मिथ्यांधकार को, हरने में तुम भास्कर हो।।
जिनवर मत वारिधि वर्धन को, पूर्ण चन्द्रमा तुम ही हो।
भविजन कुमुद विकासी मुनिवर, सब जन आश्रय तुम ही हो।।2।।

धवलशुभयशोवत्शुक्लयोगेन जातः।
परमविशदकेवलविस्फुरज्ज्ञानरश्मिः ।।
विलसितसितकीर्तिर्भानुतेजोऽतिक्रान्तः ।
निरुपमसुखधाम प्राप्तवान् तं नमामि।।3।।

धवल कीर्तिसम शुक्ल ध्यान से, घातिकर्म का घात किया।
परम विशद प्रस्फुरित ज्ञानमय, किरण सूर्य को प्राप्त किया।।

विलसत शुभ्र कीर्ति भानु का, तेज तिरस्कृत करते हो।
निरुपम धाम मुक्ति पद पाया, नितप्रतिवंदन तुमको हो।।3।।

प्रविगतभवमिथ्यामोहमायाविषादः ।
कुगतिविविधदुःखक्षारनीराब्धिपारः।।
जनममरणशून्यश्च स्तुवे संततं तं।
भवभयहरजम्बूस्वामिनं स्वात्मसिद्ध्यै।।4।।

भव से रहित मोह मिथ्या, माया विषाद से रहित मुनीश।
कुगतिगमन के विविध दुःखमय, क्षीर जलधि के पार यतीश।।
जन्ममरण से रहित सदा हो, भवभयहर जंबूस्वामी।
स्वात्मसिद्धि के लिये नमूं मैं, मेरा भव हरिये स्वामी।।4।।

स्वयमपि निजसम्यग्ज्ञानचर्या–बलेन।
हृदयसरसिजे स्वं स्वेन त्वं चिंतयित्वा।।
मुनिगणनुत! स्वस्मिन् स्वस्य हेतोश्च तिष्ठन्।
निजकृतिवशतोऽभूस्त्वं स्वयंभूः स्तुवे त्वाम्।।5।।

स्वयं आप निज सम्यग्दर्शन, ज्ञान चरित रत्नत्रय से।
हृदय कमल में निज के द्वारा, निज में निज को तुम ध्याके।।
मुनिगण नुत! निज हेतू निज में, स्थित हो तुम निजकृति से।
हुये स्वयंभू स्वयं क्रिया से, तव संस्तवन करूँ मुद से।।5।।

प्रविलसदचलार्चिर्भानुमाली चिदात्मा।
विगतकुमतरात्रिर्ध्वस्तकुज्ञानदोषः ।।
अयमतुलविवस्वान् रक्तिमास्त्री–विरक्तः।
उदयति हृदयाद्रेस्त्वां श्रितानां स्तुवेऽतः।।6।।

विलसत अचल किरणमय भास्कर, चिच्चैतन्य चिदानंद हो।
कुमत निशा से रहित महा–कुज्ञान दोष से शून्य अहो।।
अतुल सूर्य हो आप लालिमा, भार्या से विरक्त मन हो।
वंदूं तुमको आश्रित जन के, हृदयाचल पर उगते हो।।6।।

त्रितयजगति मोहस्त्वेकसाम्राज्यकर्ता।
विधृतकुनयगर्वः कुत्सितन्यायकारी।।
त्रिभुवनजनताः संत्रास्यमानाः सदैव।
तमपि विजितवान् यो मोहजयिनं स्तुवे तम्।।7।।

त्रिभुवन में यह मोह अकेला, सार्वभौम साम्राज्य करे।
कुनयगर्व को धारे कुत्सित–न्याय महाअन्याय करे।।
त्रिभुवन जनता त्रासित करके, सदा अनंतों दुःख देता।
उसको जीत मोहविजयी तुम, हुये नमूं तुमको त्रेधा।।7।।

अनुपमनिजतत्त्वं चिच्चमत्कारमात्रम्।
स्वरसविसरभारैः स्वोत्थसौख्यामृतं तत्।।
गणधरनुतवीराल्लब्धसम्यक्स्वभावः।
अमृतमयपदं त्वं संश्रितोऽहं श्रये त्वाम्।।8।।

अनुपम स्वात्मतत्त्व है चिच्चैतन्य चमत्कारी जग में।
स्वरससुधा भार से निज उत्पन्न सुखामृत सुंदर है।।
गणधर से नुत वीर प्रभू से, प्राप्त किया निज सम्यग्ज्ञान।
अमृतमय शिवपद को पाया, तव आश्रय लेऊँ सुखदान।।8।।

जंबूवने शिवं प्राप्तो, जम्बूस्वामी मुनीश्वरः।
मया प्रणम्यते भक्त्या, ज्ञानमूर्तिः स्वसंपदे।।9।।

जंबूवन से मोक्ष गये हैं, श्री जंबूस्वामी मुनिनाथ।
भक्ती से निजसंपति हेतु, प्रणमूं ''ज्ञानमूर्ति' शिवनाथ।।9।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं. १

चौबीस तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद –

पुरुदेव आदि चौबिस तीर्थंकर, धर्मतीर्थ करतार हुये।
इस जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के, आर्यखंड में नाथ हुये।।
इन मुक्तिवधू परमेश्वर का, हम भक्ती से आह्वान करें।
इनके चरणाम्बुज को जजते, भव भव दुःखों की हानि करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद –

हे नाथ! मेरी ज्ञानसरिता, पूर्ण भर दीजे अबे।
इस हेतु जल से आप के, पदकमल को पूजूँ अबे।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म में सम्पूर्ण शीतल, सलिल धारा पूरिये।
तुम चरण युगल सरोज में, चंदन चढ़ाऊँ इसलिए।।चौबीस.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंडित सौख्य निधि, भंडार भर दीजे प्रभो।
इस हेतु अक्षत पुंज से, मैं पूजहूँ तुम पद विभो।।चौबीस.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मगुण सौगंध्य सागर, पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु मैं सुरभित सुमन ले, पूजहूँ तुम पद विभो।।चौबीस.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरी करो परिपूर्ण तृप्ती, आत्म सुख पीयूष से।
भगवन्! अतः नैवेद्य से, पूजूँ चरण युग भक्ति से।।चौबीस.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान ज्योती मुझ हृदय में, पूर्ण भर दीजे अबे।
मैं आरती रुचि से करूँ, अज्ञानतम तुरतहिं भगे।।चौबीस.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मयश सौरभ गगन में, व्याप्त कर दीजे प्रभो।
इस हेतु खेऊँ धूप मैं, कटुकर्म भस्म करो विभो।।चौबीस.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मगुण संपत्ति को, अब पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु फल को मैं चढ़ाऊँ, आपके सन्निध विभो।।चौबीस.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल गुण निज के अनंते, किस विधी से पूर्ण हों।
बस अर्घ्य अर्पण करत ही, निज "ज्ञानमति" सुख पूर्ण हो।।चौबीस.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

तीर्थंकर चरणाब्ज में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निजगुण मणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, आत्म सौख्य विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–चौबोल छंद–

आवो हम सब करें वंदना, चौबीसों भगवान की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।
जय जय जिनवरं-4

आदिनाथ युग आदि तीर्थंकर, अजितनाथ कर्मारि हना।
संभवजिन भव दुःख के हर्ता, अभिनंदन आनंद घना।।
सुमतिनाथ सद्बुद्धि प्रदाता, पद्मप्रभु शिवलक्ष्मी दें।
श्री सुपार्श्व यम पाश विनाशा, चन्द्रप्रभू निज रश्मी दें।।
केवलज्ञान सूर्य बन चमके, त्रिभुवन तिलक महान की।। तीर्थं.।।1।।
जय जय जिनवरं-4

पुष्पदंत भव अंत किया है, शीतल प्रभु के वच शीतल।
श्री श्रेयांस जगत हित कर्ता, वासुपूज्य छवि लाल कमल।।
विमलनाथ ने अघ मल धोया, जिन अनंत गुण अन्तातीत।
धर्मनाथ वृषतीर्थ चलाया, शांतिनाथ शांतिप्रद ईश।।
शांतीच्छुक जन शरण आ रहे, ऐसे करुणावान की।।तीर्थं.।।2।।
जय जय जिनवरं-4

कुंथुनाथ करुणा के सागर, अर जिन मोह अरी नाशा।
मल्लिनाथ यममल्ल विजेता, मुनिसुव्रत व्रत के दाता।।
नमिप्रभु नियम रत्नत्रय धारी, नेमिनाथ शिवतिय परणा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, महावीर भविजन शरणा।।
इनने शिव की राह दिखाई, जन-जन के कल्याण की।।तीर्थं.।।3।।
जय जय जिनवरं-4

तीर्थंकर के जन्म समय से, दश अतिशय श्रुत में गाये।
केवलज्ञान प्रगट होते ही, दश अतिशय गणधर गायें।।

देवोंकृत चौदह अतिशय हों, सुंदर समवसरण रचना।
इन्द्र-इन्द्राणी देव-देवियाँ, गाते रहते गुण गरिमा।।
सभी भव्य गुण कीर्तन करते, अभयंकर जिननाम की।।तीर्थं.।।4।।
जय जय जिनवरं-4

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, भामंडल चामर सिंहासन।
तीन छत्र सुरदुंदुभि बाजे, दिव्यध्वनी है अमृतसम।।
आठ महा ये प्रातिहार्य हैं, गंधकुटी में प्रभु शोभें।
विभव वहाँ का सुर नर पशु क्या, मुनियों का भी मन लोभे।।
गणधर गुरु भी संस्तुति करते, अविनश्वर भगवान की।।तीर्थं.।।5।।
जय जय जिनवरं-4

दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज ये, चार अनंत चतुष्टय हैं।
ये छ्यालिस गुण अर्हंतों के, फिर भी गुणरत्नाकर हैं।।
क्षुधा तृषादिक दोष अठारह, प्रभु के कभी नहीं होते।
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर, हित उपदेशी ही होते।।
परम पिता परमेश्वर स्वामिन्! पूजा कृपानिधान की।।तीर्थं.।।6।।
जय जय जिनवरं-4

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा –

धर्मचक्र के नाथ, द्विविध धर्मकर्ता प्रभो।
नमूँ नमाकर माथ, ''ज्ञानमती'' कलिका खिले।।7।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

अनुबद्ध केवली पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

तीर्थंकरों के तीर्थ में अनुबद्ध केवलि जिन हुये।
बहुतेक यतिगण शिव गये बहुतेक अनुत्तर गये।।
बहुतेक मुनि सौधर्म आदिक ग्रैवेयक तक भी गये।
उन सर्व यति की थापना कर, पूजते सब सुख भये।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तमुनिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तमुनिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तमुनिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–चाल पूजों पूजों श्री......

स्वच्छ गंगा नदी का जल है। जो स्वातम का हरता मल है।
पूजते ही मिले इष्ट फल है। मुनींद्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें नगन मुनिनाथा। जिन्हें सुरगण नमाते माथा।
तीन रत्नों के हैं ये प्रदाता। मुनीन्द्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर केशर लाऊँ, सौगंधित बनाके घिसाऊँ।
चर्चते चर्ण में शांति पाऊँ, मुनींद्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकांती सदृश तंदुल हैं। पुंज धारे हृदय निर्मल है।
स्वात्मसुखप्राप्त होता विमल है मुनींद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद पुष्पों का हार बनाऊँ। काम जेता मुनी को चढ़ाऊँ।
आत्मगुण की सुगंधी पाऊँ। मुनींद्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सेमई खीर लाडू भराऊँ। अर्पते भूख बाधा मिटाऊँ।
आत्म पीयूष का स्वाद पाऊँ। मुनीन्द्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण दीपक में कर्पूर ज्वाला। आरती से भगे तम काला।
हो स्वातम में ज्ञान उजाला। मुनींद्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधि अगनि में। कर्म जल के भसम हों क्षण में।
स्वात्मगुण कीर्ति फैले गगन में। मुनींद्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर सेव सरस हैं। अर्पते ही मिले समरस है।
हो संयम सुधामय रस है। मुनींद्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि अर्घ बनाऊँ। स्वर्ण पुष्प भी उसमें मिलाऊँ।
साधुगण के निकट में चढ़ाऊँ। मुनीन्द्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आ.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलि–अपवर्ग–स्वर्गप्राप्तसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

मुनिवर चरण सरोज, जलधारा से पूजते।
मिले पूर्ण संतोष, शांतिधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प, सुरभित करते दश दिशा।
होवे पुष्टी, तुष्टि, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अनुबद्ध केवली अर्घ्य

अनुक्रम केवलि मुक्तिपद, प्राप्त स्वर्ग पद प्राप्त।
पुष्पांजलि से पूजते, मिटे सकल भवताप।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चामर छंद–

आदिनाथ के चुरासि आनुबद्ध केवली।
स्वात्म सौख्य दे सके इन्हों कि भक्ति एकली।।
इष्ट का वियोग ना अनिष्ट का संयोग ना।
पूजते इन्हें सदैव सर्व सौख्य हो घना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनुबद्ध केवली चुरासि अजितेश के।
मुक्ति वल्लभा वरी सुजात रूप धार के।।इष्ट.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवेश के चुरासि केवली अनुक्रमे।
देव इंद्र खेचरादि आप पाद में रमें।।इष्ट.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अभीनंदनेश के चुरासि केवली।
एक बाद एक आनुबद्ध पात्रता भली।।इष्ट.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ सुमति के चुरासि आनुबद्ध केवली।
पाद धारते जहाँ पे पूज्य हो वही थाली।।इष्ट.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाथ के चुरासि केवली अनुक्रमे।
पादपद्म मैं नमूँ निजात्म सौख्य पावने।।इष्ट.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के चुरासि आनुपूर्व्य[1] केवली।
वंदते अनंत जन्म की सभी व्यथा टली।।इष्ट.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ के चुरासि आनुबद्ध केवली।
पूजते निजात्म तत्त्व की कली कली खिली।।इष्ट.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के चुरासि आनुपूर्व्य केवली।
पादपद्म के जजें समस्त आपदा टली।।इष्ट.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलेश के चुरासी आनुबद्ध केवली।
नाम मात्र लेवते निजात्म संपदा मिली।।इष्ट.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य चतुरशीति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांस के नुबद्ध केवली बहत्तरा।
घाति घात के अघाति घातते जिनेश्वरा।।इष्ट.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य द्वासप्तति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के चवालिसों-नुबद्ध केवली।
घाति घातते उन्हें अनंत सम्पदा मिली।।इष्ट.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य चतुश्चत्वारिंशत्-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ विमल के सु चालिसों नुबद्ध केवली।
तीन रत्न पावते हि सिद्धि वल्लभा मिली।।इष्ट.।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य चत्वारिंशत्-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंत के नुबद्ध केवली छतीस हैं।
सर्वकर्म नाश राजते त्रिलोक शीश हैं।।

1. अनुबद्ध-आनुपूर्व्य-एक के बाद एक ऐसे क्रम-क्रम से हुये हैं।

इष्ट का वियोग ना अनिष्ट का संयोग ना।
पूजते इन्हें सदैव सर्व सौख्य हो घना।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य षट्त्रिंशत्-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के नुबद्ध केवली बतीस हैं।
धर्म प्राण भव्य जीव से हि पूजनीक हैं।।इष्ट.।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य द्वात्रिंशत्-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के नुबद्ध केवली अठाइसे।
नाम लेत ही अपूर्व सौख्य शांति हो वशे।।इष्ट.।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य अष्टाविंशति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथु के नुबद्ध केवली सु चार बीस हैं।
मृत्यु मल्ल मार के बसें त्रिलोक शीश हैं।।इष्ट.।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य चतुर्विंशति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अरह के नुबद्ध केवली सु बीस हैं।
देव इंद्र चक्रवर्ति वंद्य सर्व ईश हैं।।इष्ट.।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य विंशति-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के सु सोलहों नुबद्ध केवली।
धर्म अर्थ काम मोक्ष साधके हुये बली।।इष्ट.।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य षोडश-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुव्रतेश के हि बारहों नुबद्ध केवली।
संयमादि धार के अनंत वीर्य से बली।।इष्ट.।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य द्वादश-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनुबद्ध केवली नमीश के सु आठ हैं।
भव्य वृन्द के सदैव सर्व ठाठ बाट हैं।।इष्ट.।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य अष्टा-अनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के सु चार आनुबद्ध केवली।
मैं नमूँ उन्हें सदैव स्वात्म ज्योति हो भली।।इष्ट.।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य चतुरनुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के नुबद्ध केवली सु तीन ही।
वंदते उन्हें निजात्म भेद ज्ञान हो सही।।इष्ट.।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य त्रयानुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीरनाथ के सु तीन आनुबद्ध केवली।
गौतमो सुधर्मसूरि जंबुस्वामि केवली।।इष्ट.।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः त्रयानुबद्धकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

जिस दिन तीर्थंकर मुक्ति गये, उस दिन हो केवलज्ञान जिन्हें।
फिर उनके मुक्ती जाते ही, जो मुनि उस दिन केवली बनें।।
इस तरह श्रृंखला नहिं टूटे, अनुबद्ध केवली होते हैं।
उनके चरणों का वंदन कर, हम कर्म कालिमा धोते हैं।।

–दोहा–

ग्यारह सौ व्यासी कहे, अनुक्रम केवलि ईश।
या[1]तेरह सौ सत्तरे, नमूँ नमूँ नत शीश।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां द्व्यशीत्युत्तरएकादशशतानुबद्धकेवलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

मुक्ति प्राप्त मुनियों के अर्घ्य

–सोरठा–

ऋषभदेव के शिष्य, साठ सहस नौ सौ कहे।
लिया मुक्ति पद नित्य, नितप्रति पूजूँ भाव सों।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सिद्धपदप्राप्तषष्टिसहस्रनवशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के साधु, रत्नत्रय निधि के धनी।
सतहत्तर सु हजार, इक सौ यति गण शिव गये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य सिद्धपदप्राप्तसप्तसप्ततिसहस्र-एकशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दो मत माने हैं यहाँ पहले मत से अर्घ बनाये हैं। तिलोयपण्णत्ति पृ.303।

संभव के इक लाख, सत्तर सहस सु एक सौ।
मुक्ति गये मुनिनाथ, पूजत समकित निधि मिले।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य सिद्धपद-प्राप्तएकलक्षसप्ततिसहस्र-एकशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोय लाख अस्सी, सहस एक सौ यतिवरा।
हता मृत्यु हस्ती, अभिनदंन के शिष्य ये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य सिद्धपदप्राप्तद्विलक्षअशीतिसहस्रएकशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के शिष्य, तीन लाख सोलह शतक।
लिया स्वात्मपद नित्य, ज्ञान ज्योति कीजे नमूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तत्रिलक्षषोडशशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू के शिष्य, तीन लाख चौदह सहस।
लिया मुक्ति पद नित्य, पूजत जिन गुण संपदा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य सिद्धपदप्राप्तत्रिलक्षचतुर्दशसहस्रयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विलाख पच्चासीय, हजार छह सौ मुनिवरा।
जिन सुपार्श्व के शिष्य, मुक्ति गये मैं पूजहूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य द्विलक्षपंचाशीतिसहस्रषट्शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभु के शिष्य, दोय लाख चौंतिस सहस।
मुक्ति वल्लभा नित्य, पाई पूजत अघ टले।।8।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभनाथस्य सिद्धपदप्राप्तद्विलक्षचतुस्त्रिंशत्सहस्रयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधिनाथ के शिष्य, इक लख उन्यासी सहस।
छह सौ शिव परिणीय, पूजत दुख दारिद टले।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-एकलक्ष-एकोनाशीतिसहस्रषट्-शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल के मुनिनाथ, अस्सी हजार छै शतक।
सिद्धिवधू के नाथ, नमते संयम निधि मिले।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-अशीतिसहस्रषट्‌शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस के शिष्य, पैंसठ हजार छह शतक।
मुक्तिरमा के प्रीय, जजत पुत्र पौत्रादि सुख।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-पंचषष्टिसहस्रषट्‌शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के शिष्य, चौवन हजार छह शतक।
लिया मोक्ष सुख नित्य, जजत मिले धन संपदा।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य सिद्धपदप्राप्तचतुःपंचाशत्सहस्रषट्‌शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ के शिष्य, सहस इक्यावन तीन सौ।
मुक्ति वधू से प्रीत्य, जजत सर्व व्याधी नशे।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-एकपंचाशत्सहस्रत्रिशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अनंत के शिष्य, इक्यावन्न हजार हैं।
शाश्वत सुख रस पीय, नित्य निरंजन सिद्ध हैं।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-एकपंचाशत्सहस्रयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उनंचास हज्जार, सात शतक मुनि शिव गये।
अनवधिगुण भंडार, जजूँ शिष्य प्रभु धर्म के।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-एकोनपंचाशत्सहस्रसप्तशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के शिष्य, सहस अड़तालिस[1] चार सौ।
लिया शांति सुख नित्य, नमूँ शांतिपद के लिये।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-अष्टचत्वारिंशत्सहस्रचतुःशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अड़तालीस हजार।

कुंथुनाथ के शिष्य, छ्यालिस हजार आठ सौ।
मुक्ति वधू के प्रीत्य, नमत जन्म मृत्यू टले।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य सिद्धपदप्राप्तषट्‌चत्वारिंशत्सहस्र-अष्टशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ के शिष्य, सैंतिस हजार दोय सौ।
पाया शिव सुख नित्य, जजत रोग पीड़ा नशे।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-सप्तत्रिंशत्सहस्रद्विशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के शिष्य, सहस अठाइस आठ सौ।
गये शिवालय नित्य, मृत्यु मल्ल को मार के।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-अष्टाविंशतिसहस्र-अष्टशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के शिष्य, उन्निस हजार दोय सौ।
लिया स्वात्मपद नित्य, पूजत संतति सुख बढ़े।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-एकोनविंशतिसहस्रद्विशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमितीर्थंकर शिष्य, नौ हजार छह सौ यती।
लिया मुक्तिपद नित्य, पूजत ही सुख संपदा।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य सिद्धपदप्राप्तनवसहस्रषट्‌शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के शिष्य, आठ हजार तपोधना।
लिया मोक्षपद नित्य, पूजत रत्नत्रय मिले।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य सिद्धपदप्राप्त-अष्टसहस्रयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के शिष्य, बासठ सौ मुनिगण भरे।
किया ज्ञान सुख नित्य, पूजत सब संकट हरें।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य सिद्धपदप्राप्तषष्टिसहस्रद्विशतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर जिन शिष्य, चवालिस सौ नग्न यति।
प्राप्त किया सुख नित्य, पूजत जिन गुण संपदा।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः सिद्धपदप्राप्तचतुश्चत्वारिंशत्शतयतिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

वृषभादि शांतिजिन तक सुशिष्य, केवलोत्पत्ति दिन मोक्ष गये।
शेष आठ तीर्थकर के यतिगण, छह महिने तक में मोक्ष गये।।
कुंथू अर मल्लि सुव्रत के, क्रम से इक दो त्रय छह महिने।
नमि नेमि पार्श्व वीर जिन के, क्रम से इक दो त्रय छह महिने।।

–दोहा–

चौबिस लाख चौंसठ सहस, चार शतक परिमाण।
चौबिस जिनके शिष्य शिव, गये जजूँ धर ध्यान।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां सिद्धपदप्राप्तचतुर्विंशतिलक्षचतुःषष्टिसहस्रचतुःशतकयतिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

अनुत्तर प्राप्त मुनियों के अर्घ्य

–दोहा–

ऋषभदेव के शिष्य मुनि, बीस हजार प्रमाण।
अनुत्तरों में जा बसे, नितप्रति करूँ प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य अनुत्तरप्राप्तविंशतिसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के शिष्य यति, मानें बीस हजार।
विजय आदि में जा बसे, जजूँ करें भवपार।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य अनुत्तरप्राप्तविंशतिसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवप्रभु के शिष्य मुनि, बीस हजार प्रमाण।
संयम निधिमय को जजूँ, बसें अनुत्तर जान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य अनुत्तरप्राप्तविंशतिसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के शिष्यमुनि, बारह सहस प्रमाण।
अनुत्तरों में गये हैं, नमूँ नमूँ गुण खान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के शिष्य गण, बारह सहस अशेष।
अनुत्तरों में जन्मते, जजत हरूँ भवक्लेश।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाथ के शिष्य ऋषि, बारह सहस गिनेय।
अनुत्तरों में जन्म लिए, नमत सर्वसुख देंय।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के शिष्य मुनि, हैं बारह हज्जार।
अनुत्तरों में जा बसें, नमूँ करो भवपार।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ के शिष्यगण, बारह सहस्र मान।
अनुत्तरों में जन्मते, नमत पाप की हान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य अनुत्तरप्राप्तद्वादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के शिष्यगण, ग्यारह सहस प्रसिद्ध।
अनुत्तरों में जन्मते, जजत मिले सब सिद्धि।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-एकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनके शिष्य मुनि, ग्यारह सहस्र अनिंद्य।
अनुत्तरों को पा लिया, सुरनर मुनिगण वंद्य।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-एकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांस के साधुगण, ग्यारह सहस प्रमाण।
लिया अनुत्तर सौख्य को, रत्नत्रय की खान।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-एकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के साधुगण, ग्यारह सहस बखान।
चरित शील गुण के धनी, बसे अनुत्तर थान।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-एकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह हजार शिष्यगण, विमलनाथ के तीर्थ।
अनुत्तरों में जन्मते, सुरनर खग से कीर्त।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-एकादशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत जिनके संयमी, दश हजार मुनिनाथ।
अनुत्तरों में हैं गये, नमूँ जोड़ जुग हाथ।।14।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के साधुगण, दश हजार विख्यात।
रत्नत्रय गुणमणि भरे, गये अनुत्तर खास।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-दशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के शिष्य यति, दश हजार गुणधाम।
स्वात्मसिद्धि हित मैं नमूँ, लिया अनुत्तर धाम।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ के शिष्य मुनि, दश हजार विख्यात।
अनुत्तरों में राजते, नमत करें सुख सात।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजिनवर के साधुगण, दश हजार जगसिद्ध।
अनुत्तरों को पावते, जजतें सौख्य समृद्ध।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य अनुत्तरप्राप्तदशसहस्रमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के साधु सब, अट्ठासी सौ मान्य।
अनुत्तरों में जा बसे, जजत भरें धन धान्य।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-अष्टसहस्राष्टशतमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के शिष्यगण, अट्ठासी सौ ख्यात।
महाव्रतों से पूर्ण हो, किया अनुत्तर वास।।20।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-अष्टसहस्राष्टशतमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ के साधुगण, अट्ठासी सौ सिद्ध।
यम नियमों को पूर्णकर, लिया अनुत्तर इष्ट।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-अष्टसहस्राष्टशतमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के साधुगण, अट्ठासी सौ जान।
शील गुणों को पूर्णकर, लिया अनुत्तर थान।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-अष्टसहस्राष्टशतमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के साधुगण, अट्ठासी सौ मान्य।
अनुत्तरों को प्राप्त कर, हुये सर्वजन मान्य।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य अनुत्तरप्राप्त-अष्टसहस्राष्टशतमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्धमान के शिष्यगण, अट्ठासी सौ सिद्ध।
अनुत्तरों में जा बसे, भरें सर्वनिधि ऋद्धि।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः अनुत्तरप्राप्त-अष्टसहस्राष्टशतमुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–चौबोल छंद–

विजय वैजयंता जयंत अपराजित अरु सर्वारथसिद्ध।
पाँच अनुत्तर ये माने हैं, इन्हें लहें रत्नत्रय इद्ध।।
दोय लाख सु हजार सतत्तर, आठ शतक निज पर ज्ञानी।
चौबीसों जिनवर के मुनिगण, गये अनुत्तर सुखदानी।।

–दोहा–

वर्ण गंध रस स्पर्श से, शून्य स्वात्म का ध्यान।
किया नित्य उनको नमूँ, करें सर्व कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां अनुत्तरप्राप्तद्विलक्षसप्तसप्ततिसहस्राष्ट-शतमुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

सौधर्मादि से ग्रैवेयक तक प्राप्त हुये मुनियों के अर्घ्य

–रोला छंद–

ऋषभदेव के शिष्य, तीन हजार सु इक सौ।
सौधर्मादिक स्वर्ग, प्राप्त किया मुनिपाद सों।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, सब दुख शोक नशाऊँ।
आतम निधि को पाय, फेर न भव में आऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्वर्गादिग्रैवेयकप्राप्तत्रिसहस्र-एकशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के शिष्य, उनतिस सौ गुणधारी।
सौधर्मादिक स्वर्ग, प्राप्त किया सुखकारी।।पूजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकांतप्राप्तद्विसहस्रनवशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनके शिष्य, निन्यानवे शतक हैं।
स्वर्गादिक सुख दिव्य, प्राप्त किया गुणभृत हैं।।पूजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तनवसहस्रनवशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनदंन के शिष्य, उन्यासी सौ मानो।
गुणमणि भूषित नित्य, पाया दिव सरधानो।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, सब दुख शोक नशाऊँ।
आतम निधि को पाय, फेर न भव में आऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तसप्तसहस्रनवशत-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के शिष्य, चौंसठ सौ तप धारे।
ध्यानाध्ययन सुप्रीति, पाया दिवपद सारे।।पूजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुःषष्टिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू के शिष्य, चार हजार मुनी हैं।
स्वर्गादिक सुख दिव्य, सुख पाया ज्ञान धनी हैं।।पूजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुःसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के शिष्य, चौबिस सौ मुनिपद में।
जात रूप धर दिव्य, सुख पाया स्वर्गन में।।पूजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुर्विंशतिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ के शिष्य, चार हजार बखाने।
नग्न रूप धर दिव्य, सुख पाया मनमाने।।पूजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुःसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के शिष्य, चौरानवे शतक हैं।
धर्मध्यान से सिद्ध, प्राप्त किया दिवपद हैं।।पूजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तनवसहस्रचतुःशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनके शिष्य, चौरासी सौ कहिये।
समकित गुण से दिव्य, पद पाया सरदहिये।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, सब दुख शोक नशाऊँ।
आतम निधि को पाय, फेर न भव में आऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुरशीतिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस के शिष्य, चौहत्तर सौ जानो।
रत्नत्रय से दिव्य, पद पाया सुख ठानो।।पूजूँ.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तसप्तसहस्रचतुःशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के शिष्य, चौंसठ सौ गुणभृत हैं।
नमूँ नमूँ मैं नित्य, प्राप्त किया दिवपद हैं।।पूजूँ.।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुःषष्टिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ के शिष्य, सत्तावन सौ मुनि हैं।
विमल गुणों के कीर्त्य, स्वर्ग विभूति फलत हैं।।पूजूँ.।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तपंचसहस्रसप्तशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत के शिष्य, पाँच हजार कहाये।
अठरह हजार शील, भेद धरें दिव पायें।।पूजूँ.।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अंनतनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तपंचसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के शिष्य, तेतालिस सौ गिनये।
दश धर्मों के ईश, करें प्राप्त दिव सुख ये।।पूजूँ.।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तत्रिचत्वारिंशत्शतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के शिष्य, छत्तिस सौ संयत हैं।
धर्मामृत को पीय, प्राप्त किया दिवपद हैं।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, सब दुख शोक नशाऊँ।
आतम निधि को पाय, फेर न भव में आऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तषट्त्रिंशत्साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ के शिष्य, बत्तिस सौ संयत हैं।
दुःख भवार्णवतीर्य, प्राप्त करें दिवपद हैं।।पूजूँ.।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तद्वात्रिंशत्शतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ के शिष्य, अट्ठाइस सौ जानो।
गुणधर गणधर प्रीत्य, उनकी पूजा ठानों।।पूजूँ.।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्त-अष्टाविंशतिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के शिष्य, चौबिस सौ संयत हैं।
मूल गुणट्ठाईस, धरें लहें दिवपद हैं।।पूजूँ.।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तचतुर्विंशतिशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के शिष्य, दो हजार मुनि मणि हैं।
सर्व गुणों से पूज्य, लहें स्वर्ग सुखमणि हैं।।पूजूँ.।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तद्विसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि प्रभु के मुनि शिष्य, सोलह सौ गिन लीजे।
करके पूजा भक्ति, दुःख जलांजलि दीजे।।पूजूँ.।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तषोडशशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के शिष्य, बारह सौ परिमाणे।
उनकी पूजा भक्ति, भव भव के दुख हाने।।पूजूँ.।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्तद्वादशशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के शिष्य, एक हजार कहाये।
सब गुणमणि से पूर्ण, भव भव भ्रमण मिटायें।।पूजूँ.।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्त-एकसहस्रसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्धमान के शिष्य, मुनी आठ सौ गाये।
उनकी पूजा भक्ति, करके सौख्य बढ़ाये।।पूजूँ.।।24।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरस्वामिनः स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्त-अष्टशतसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

सब मूलोत्तर गुण से पूरित, यम नियम शील श्रुत विनय धरें।
ये भावलिंग मुनिगण नित ही, तप संयम से शिव निकट करें।।
इक लाख पाँच हजार आठ सौ, अंत समाधी करते हैं।
सौधर्म स्वर्ग से लेकर के, ग्रैवेयक तक सुर बनते हैं।।

–दोहा–

इनकी पूजा भक्ति से, संयम रत्न लभेय।
नमूँ नमूँ गुरु प्रीति से, आतम सुख विलसेय।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां स्वर्गादिग्रैवेयकपर्यंतप्राप्त-एकलक्षपंचसहस्र–अष्टशतसाधुभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक तीर्थंकर तीरथ में, दश दश मुनि घोर उपसर्ग सहें।
उसमें ही केवलज्ञान पाय, तत्क्षण मुक्ती पद सौख्य लहें।।
श्री वीरतीर्थ में नमि मतंग, सोमिल व रामसुत सूदर्शन।
यमलीक बलीक सु किष्कंबिल, पालंब अष्टसुत दुखभंजन।।

दश दशांतकृत केवली, दो सौ चालिस सर्व।
नमूँ नमूँ मुझको मिले, गुण सहिष्णु सर्वस्व।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थकालेषु दशदशघोरोपसर्गविजयि-अंतकृतकेवलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक तीर्थ में दश दश मुनि, दारुण उपसर्ग सहन करके।
पंचानुत्तरों में जन्म लहें, दशनाम सु अंतिम जिनवर के।।
ऋषिदास धन्य सु नक्षत्र मुनि कार्तिकेय आनंद नंदन।
गुरु शालिभद्र मुनिअभय वारिषेण चिलात सुत का अभिवंदन।।
दश दश मुनि उपसर्ग सह, अनुत्तरों में जांय।
दो सौ चालिस मुनि नमूँ, सर्वोपसर्ग नशाय।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थकालेषु दशदशदारुणोपसर्गविजयि-अनुत्तरौपादिकमुनिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं अनुबद्धकेवलिप्रभृति सर्वसाधुभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

तीर्थंकर शिष्यत्व का, जिन्हें मिला सौभाग्य।
नमूँ नमूँ उनको सदा, उन्हें मुक्ति सुखसाध्य।।1।।

–शिखरिणी छंद–

नमूँ अर्हन्मुद्रा नगनतन दिग्वस्त्र धरते।
नमूँ तीर्थंकर के निकट व्रत दीक्षादि धरते।।
नमूँ संयम शील प्रभृति बहुयोगादि धरते।
सदा ध्याते आत्मा समरस सुधास्वाद चखते।।2।।
अहो स्वात्मा नंते दरश सुख ज्ञानादि सहिता।
अनादी से शुद्धा करम मल दोषादि रहिता।।

नहीं ध्याते ऐसे विमल गुण पूरित स्वयम् को।
दुखी वे ही होते भ्रमत जग में भूल पथ को।।3।।
मुनी सच्चे वो ही धरत अठविस मूलगुण जो।
तपें बारह तप जो परिषह सहें बाइसहिं जो।।
सदा स्वाध्यायी भी सतत निज को शुद्ध समझें।
सदा ज्ञानी ध्यानी स्वपर विद हों स्वात्म निरखें।।4।।

खड़े भूभृत् चोटी गरम ऋतु में आतपन में।
नदी तीरे तिष्ठें शरद ऋतु में स्वात्म सुख में।।
तरू नीचे बैठें जलद बरसें बूँद टपकें।
धरें त्रै योगों को मगन बहुतें साम्यरस में।।5।।

सहें उपसर्गों को क्षपक श्रयणीं माहिं चढ़के।
सभी घाती घातें उदित रवि कैवल्य चमके।।
सुबोधे भव्यों को मुधर हित पीयूष वच से।
अघाती को घातें समय इक में मोक्ष पहुँचें।।6।।

मुनी धर्मध्यानी विविध गुण रत्नों सहित हों।
अनुत्तर में जन्में, इक द्वय भवों लेय शिव हों।।
कदाचित् स्वर्गों में जनम धरतें फेर क्रम से।
वरें मुक्ती कन्या अधिक भव में ना भ्रमत वे।।7।।

जहाँ ऐसे साधु विचरण करें प्रेम सब में।
न हों दुर्भिक्षादी सतत शुभ क्षेमादि जग में।।
फलें सबही खेती छह ऋतु फलें एक पल में।
महा क्रूरादी भी पशु गण धरें प्रीति सब में।।8।।

जयो साधू सर्वे नमहुँ कर जोड़े सतत में।
मिले सम्यक्त्वादी निजगुण मुझे एक क्षण में।।
नहीं होवे मेरा जन्म धरना फेर जग में।
यही माँगूं स्वामी निजगुण भरो नाथ मुझ में।।9।।

–घत्ता–

जय जय तीर्थंकर, शिष्य साधुवर, जय त्रिभुवन में पूज्य गुरो।
जिन मुद्राधारी, गुणगण भारी, ज्ञानमती मुझ पूर्ण करो।।10।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थेषु अनुबद्धकेवलिस्वर्गापवर्गप्राप्तसाधुभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

अनुबद्ध केवली मुक्तिप्राप्त, आदि मुनियों को वंदन है।
इनकी पूजा भक्ती श्रद्धा, स्वयमेव मुक्ति का साधन है।।
जो भव्य अर्चना करते हैं, वे रत्नत्रय निधि पाते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति पा करके, निश्चित सिद्धालय जाते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ३

तीर्थ प्रवर्तनकाल पूजा

–अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद–

तीर्थंकरों के धर्म प्रवर्तन काल धर्म बरसे हैं।
केवलज्ञानी मुनी आर्यिका होते ही रहते हैं।।
तीर्थ प्रवर्तन काल पूजहूँ ऋषि मुनिगण को पूजूँ।
आह्वानन स्थापन करके सर्व दुखों से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–नरेन्द्र छंद

सिंधु नदी का प्रासुक जल ले कंचन भृंग भराऊँ।
जिनपद गुरुपद धारा करते भव भव तपन बुझाऊँ।।
तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल जजूँ मन लाके।
जितने हुये केवली मुनिगण वंदूँ शीश झुकाके।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन कर्पूरादिक घिसकर सुरभित लाऊँ।
मोह ताप से तप्त स्वात्म में पद चर्चत सुख पाऊँ।।तीर्थं.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अक्षत अमल धोयकर पुंज चढ़ाके पूजूँ।
रत्नत्रय निधि प्राप्त होय मुझ भवभव दुख से छूटूँ।।तीर्थं.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद कमल बेला सुमनों का हार बनाकर लाऊँ।
कामदर्पहर प्रभुपद अर्चत मनवांछित फल पाऊँ।।
तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल जजूँ मन लाके।
जितने हुये केवली मुनिगण वंदूँ शीश झुकाके।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपुआ पकवान समोसे भर भर थाल चढ़ाऊँ।
क्षुधा वेदनी शीघ्र नष्ट हो आतम तृप्ती पाऊँ।।तीर्थं.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण दीप में घृत भर करके तमहर ज्योति जलाऊँ।
सर्व हृदय अज्ञान दूर कर ज्ञान ज्योति प्रगटाऊँ।।तीर्थं.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित धूप घटों में खेऊँ कर्म जलाऊँ।
पर से भिन्न निजातम सुख को पाकर दुःख नशाऊँ।।तीर्थं.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अनार संतरा नींबू सरस मधुर फल लाऊँ।
स्वात्म सौख्य फलप्राप्त करन को प्रभु के निकट चढ़ाऊँ।।तीर्थं.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प चरुवर दीप धूप फल लाऊँ।
अर्घ बनाकर भक्तिभाव से प्रभु के निकट चढ़ाऊँ।।तीर्थं.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

तीर्थकाल को पूजते, त्रयधारा सुखकार।
करूं शांतिधारा अबे, होवे शांति अपार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित पुष्प अनेक।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मिले आत्म निधि एक।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (24 अर्घ्य)

–सोरठा–

तीर्थ प्रवर्तन काल, उसमें केवलि मुनि हुये।
ये सब गुणमणिमाल, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

सागर पचास सुलाख कोटी, तथा इक पूर्वांग है।
पुरुदेव जिनका तीर्थ वर्तन, काल शास्त्र प्रमाण है।।
इस काल में बहुकेवली श्रुतकेवली मुनिगण हुये।
निज आत्म संपद प्राप्त हेतु जजूँ उनको नत हुये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्य पंचाशल्लक्षकोटिसागर-एकपूर्वांगतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ तीस लाख करोड़ सागर, और त्रय पूर्वांग है।
श्री अजित जिनका तीर्थ वर्तन, काल भविजन त्राण है।।इस.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य त्रिंशल्लक्षकोटिसागरपूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश लाख कोटी सागरोपम, तथा चउ पूर्वांग है।
संभव जिनेश्वर तीर्थ वर्तन, काल शिव पथ दान है।।इस.।।3।।

ॐ ह्रीं संभवनाथस्य दशलक्षकोटिसागरचतुःपूर्वांगतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव लाख कोटी सागरा, पूर्वांग चार प्रमाण है।
अभिनंदनेश्वर तीर्थ वर्तन, काल सब जग त्राण है।।इस.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनतीर्थंकरस्य नवलक्षकोटिसागरचतुःपूर्वांगतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नब्बे हजार करोड़ सागर, और चउ पूर्वांग है।
श्री सुमतिजिन का तीर्थ वर्तन, काल मुक्ति निदान है।।
इस काल में बहुकेवली, श्रुतकेवली मुनिगण हुये।
निज आत्म संपद प्राप्त हेतु, जजूँ उनको नत हुये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य नवतिसहस्रकोटिसागरचतुःपूर्वांगतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव सहस कोटी सागरा, पूर्वांग चार प्रमाण है।
श्रीपद्म जिनका तीर्थ वर्तन, काल मुक्ति प्रदान है।।इस.।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथस्य नवसहस्रकोटिसागरचतुःपूर्वांगतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ सौ करोड़ सुसागरा, पूर्वांग चार प्रमाण है।
सूपार्श्व जिनका तीर्थ वर्तन, काल मोक्ष निदान है।।इस.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य नवशतकोटिसागरचतुःपूर्वांगतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर सुनब्बे कोटि चउ, पूर्वांग काल प्रमाण है।
श्री चंद्रप्रभु का तीर्थ वर्तन, चतुःसंघ निधान है।।इस.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य नवतिकोटिसागरचतुःपूर्वांगतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

नवकोटी सागर में पूर्वांग, अठाइस पल्य का चतुर्थांश।
कम कीजे पुनः मिला दीजे, इक लाख पूर्व का वर्ष अंक।।
श्री पुष्पंदत का तीर्थ प्रवर्तन, काल धर्म युग माना है।
पाव पल्य तक इसमें धर्म, तीर्थ विच्छेद बखाना है।।

–दोहा–

धर्म तीर्थ विच्छेद में, चतुःसंघ नहिं होय।
शेष काल के केवली, मुनी नमूँ नत होय।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य पल्यचतुर्थांश-अष्टाविंशतिपूर्वांगहीन-एकलक्ष-वर्षाधिकनवकोटिसागरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक कोटी सागर में सौ सागर, आधा पल्य हीन करिये।
छ्यासठ लख छब्बिस सहसवर्ष, कम पच्चिस सहस पूर्व धरिये[1]।।
शीतल जिनका यह तीर्थ प्रवर्तन, काल चार संघ से राजे।
इसमें जिन धर्मतीर्थविच्छित्ती, आधा पल्य शास्त्र भाषें।।
तीर्थ प्रवर्तन काल में, नग्न दिगंबर साधु।
मोक्ष सतत जाते रहें, नमूँ साम्यरस स्वादु।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य अर्धपल्यशतसागरन्यून-एककोटिसागरषट्षष्टि-लक्षषट्विंशतिसहस्रवर्षन्यूनपंचविंशतिसहस्रवर्षपूर्वतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुत-केवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौवन सागर इक्कीस लाख, वर्षों में पौन पल्य कम हैं।
श्रेयांसनाथ का तीर्थकाल, इसमें केवलिगण मुनिगण हैं।।
इनके तीरथ में पौन पल्य, जिनधर्म तीर्थ व्युच्छिन्न रहा।
धर्मामृत इच्छुक मुनि ने ही, इस तीर्थ काल को पूज्य कहा।।
रत्नत्रयनिधि के धनी, केवलज्ञानी साधु।
नमूँ नमूँ उनको सदा, मिटे जन्म की व्याधि।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य पादोपल्यहीन-एकविंशतिलक्षवर्षअधिकचतुःपंचा-शत्सागरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ तीस सागरा चौवन लाख, बरस में एक पल्य कम है।
श्रीवासुपूज्य का तीर्थकाल यह, मोक्षमार्ग का साधन है।।
इस एक पल्य कम में ही, तीर्थ का छेद बखाना है।
इन दिनों न होवें जैन साधु, शिवद्वार बंद ही माना है।।
तीर्थ काल के केवली, साधु सुरासुर वंद्य।
नमूँ नमूँ उनके चरण, हरूँ जगत का फंद।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य एकपल्यहीनत्रिंशत्सागरचतुःपंचाशल्ल-क्षवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्याय साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मिला दीजिए।

नव सागर पंद्रह लाख बरस में, पौन पल्य कम कर दीजे।
यह विमलनाथ का तीर्थ प्रवर्तन, काल इसे वंदन कीजे।।
यह पौन पल्य का धर्म तीर्थ, व्युच्छेद शास्त्र में गाया है।
जिनशासन के केवलज्ञानी, मुनियों को शीश नमाया है।।
बहिरातमता छोड़कर, निज शुद्धात्म स्वरूप।
ध्याते परमात्मा बनें, चिदानंद चिद्रूप।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य पादोपल्यहीननवसागरपंचदशलक्षवर्षतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सात लाख पच्चास सहस, है बरस चार सागर माना।
बस आधा पल्य घटा दीजे, यह तीर्थ विछेद काल माना।।
जिनवर अनंत के शासन में, केवलज्ञानी बहुतेहि मुनी।
रस वर्ण गंध स्पर्श शून्य, निज आत्म ध्यान करते सुगुणी।।
भव्य जहां दीक्षाभिमुख, नहीं हुये वह काल।
धर्मतीर्थ विच्छेद का, कहें यति[1] वृषभ कृपालु।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य अर्धपल्योनचतुःसागरसप्तलक्षपंचाशत्सहस्रवर्षतीर्थ-प्रवर्तनकालकेवलिश्रुत-केवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो लाख पचास हजार वर्ष, त्रय सागर में इक पल्य हीन।
यह धर्मनाथ का तीर्थकाल, इसमें करते मुनि कर्म क्षीण।।
जिनधर्म ध्वजा फहराती है, भवि ज्ञान ज्योति से जग देखें।
हम पूजें उन सब मुनियों को, जो भव्य कमल विकसाते थे।।
पाव पल्य विच्छेद था, धर्मतीर्थ इस काल।
तीर्थ प्रवर्तन काल को, नमूँ नमूँ नत भाल।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य एकपल्यहीनत्रयसागरद्विलक्षपंचाशत्सहस्रवर्ष-तीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह शतक सुपचास वर्ष, व अर्ध पल्य प्रमाण है।
श्रीशांतिजिन का तीर्थ वर्तन, काल जिनमत प्राण है।।

1. हुंडावसप्पिणिस्स य, दोसेणं वेत्ति सोत्ति विच्छेदे।
दिक्खाहि-मुहाभावे अत्थमिदो धम्मवर-दीओ।।1291।।
(चतुर्थ अधिकार, तिलोयपण्णत्ति, यतिवृषभाचार्य विरचित)

श्रीशांतिजिन से आज तक, औ दुषम कालावधी तक।
निरबाध चउविध संघ है, होता रहेगा अंत तक।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य अर्धपल्यद्वादशशतपंचाशत्वर्षतीर्थप्रवर्तन-कालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवसौ निन्यानवे कोटि, निन्यानवे लक्ष सत्तानवे।
हजार द्विशत पचास वर्ष, कम पल्य के चतुर्थांश में।।
यह तीर्थ वर्तन काल, कुंथूनाथ का सुरवंद्य है।
मुनि केवली होते रहें, पूजूँ उन्हें वे वंद्य हैं।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य नवार्बुदनवनवतिकोटिनवनवतिलक्षसप्तनवतिसहस्र-द्विशतपंचाशत्वर्षहीनपल्यचतुर्थभागतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ अरब निन्यानवे कोटि, निन्यानवे ही लाख हैं।
छ्यासठ सहस सौ वर्ष अर–जिन तीर्थ वर्तन काल है।।
ऋषि मुनि यती अनगार केवल, ज्ञान प्राप्ती कर रहें।
इनकी करें अर्चा सतत, ये ताप त्रय मेरे दहें।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य नवार्बुदनवनवतिकोटिनवनवतिलक्षषट्षष्टिसहस्रशत-वर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तीर्थ चौवन लाख सैंतालिस सहस चउशत बरस।
यह मल्लि प्रभु का सुरगणों के, आगमन से जिनसदृश।।
मुनिराज जिन मुद्रा धरें, विहरें सदा मंगल करें।
हम पूजतें इन साधुओं को, विघ्न बाधा परिहरें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य चतुःपंचाशल्लक्षसप्तचत्वारिंशत्सहस्रचतुःशतवर्षतीर्थ-प्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह लाख पांच हजार वर्षों, धर्म वर्तन काल है।
प्रभु मुनीसुव्रत नाथ का, शासन महान उदार है।।

जो केवली मुनिगण हुये हैं, मैं उन्हें वंदन करूँ।
निज आत्म सौरभ प्राप्त करके, जगत को सुरभित करूँ।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य षट्लक्षपंचसहस्रवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलि-श्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पण[1]लाख अठरह सौ वरस, नमिनाथ तीरथ काल है।
अर्हंतमुद्रा धारि मुनिगण, करें भविक निहाल हैं।।
मैं आत्मरस पीयूष अनुभव, प्राप्ति हेतू जजत हूँ।
सम्यक्त्व क्षायिक होय मेरा, आश यह मन धरत हूँ।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य पंचलक्ष-अष्टादशशतवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुत-केवलि-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौरासि सहस्र सु तीन सौ, अस्सी बरस तक धर्म है।
श्री नेमि जिनका तीर्थ वर्तन, करत भवि को धन्य है।।
सज्जाति[2] सद्गार्हस्थ्य, पारिव्राज्य और सुरेंद्रता।
साम्राज्य अरु आर्हन्त्य परिनिर्वाण पूजत हों स्वतः।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य चतुरशीतिसहस्रत्रयशत-अशीतिवर्षतीर्थप्रवर्तनकाल-केवलिश्रुतकेवलि–आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ अठत्तर वर्ष तक प्रभु, पार्श्व का शासन चला।
इसमें सतत सुरगण यहां, जिन भक्त का करते भला।।
मैं पूजहूँ निज सात परम, स्थान पाने के लिये।
हे नाथ! अब करके दया, मुझ थान मुझको दीजिये।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य द्विशत-अष्टसप्ततिवर्षतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुत-केवलिआचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्किस सहस ब्यालिस बरस, तक वीर का शासन यहाँ।
तब तक चतुर्विध धर्म चलता, ही रहेगा नित यहाँ।।
त्रय वर्ष साढ़े आठ महिने, पूर्व पंचम काल तक।
यह अविच्छिन्न परंपरा मुनि, की सभी को नमूँ नत।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः एकविंशतिसहस्रद्विचत्वारिंशद्वर्षतीर्थप्रवर्तनकाल-केवलिश्रुतकेवलि–आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---
1. पांच। 2. ये सात परम स्थान हैं।

–पूर्णार्घ्य–

श्री ऋषभदेव से लेकर के, अंतिम वीरांगज मुनि तक भी।
जिन मुद्राधारी रत्नत्रय निधि[1], धरा धरत धारेंगे भी।।
निश्चय व्यवहार रत्नत्रय युत, निज आत्मतत्त्वविद इन सबको।
नित शत शत मेरा वंदन है, मैं भक्ती से पूजूँ गुरु को।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्याय-पंचमकालान्त्यवीरांगजसाधुपर्यंतसर्वसाधुभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्राह्मी सुंदरि से लेकर के, अंतिम साध्वी सर्वश्री तक।
संयतिका जिनकी हुईं हो रहीं, होवेंगी आरजखंड तक।।
दो साड़ी मात्र परिग्रह धर, उपचार महाव्रतिका मानीं।
इन सबको मेरा वंदन है, प्रतिवंदन है ये गुणखानी।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनकालब्राह्मीगणिनीप्रभृतिसर्वश्री-आर्यिका-पर्यंतसर्व-आर्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य—**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्यो–पाध्यायसाधुभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

काल मोक्ष उपदेश का, मुनिगण श्लाघ्य महान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, मिले सिद्धि अमलान।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

जय जय ऋषभदेव तीर्थंकर, जय जय श्री महावीरा।
जय जय जय चौबीस जिनेश्वर, जय जय मुनिगण धीरा।।
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, आर्यखण्ड छह भेदा।
अठरा कोड़ाकोड़ी सागर, कुछ[2] कम में पुरुदेवा।।2।।

1. रत्नत्रयधारी मुनि हुए हैं, होते हैं और होवेंगे। 2. तीसरे काल में 84 लाख पूर्व तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर भगवान आदिनाथ गर्भ में आए। (आदिपुराण पर्व 12 पृ. 264)

इनने तीर्थ चलाया उसमें, प्रथम अनंतवीरज जी[1]।
मुक्ति वधूवर हुये मुक्त, का द्वार उघाड़ा इनही।।
तब से सुविधिनाथ होने तक, मुक्तिमार्ग अविछिन्ना।
धर्मनाथ तक सात तीर्थ में, कुछ कुछ हुआ विछिन्ना।।3।।

शांतिनाथ से महावीर तक, तीर्थ विछेद रहित है।
मुनी आर्यिका श्रावक और, श्राविका संघ सहित है।।
महावीर निर्वाण दिवस ही, गौतम केवलज्ञानी।
गौतम सिद्ध हुये दिन सुधर्म, मुनि थे केवलज्ञानी।।4।।

ये शिव गये जम्बूस्वामी, केवलज्ञानी उस दिन ही।
ये अनुबुद्ध केवली बासठ, दिन में हुये त्रयों ही।।
अंतिम केवलि श्रीधर मुनि, कुंडल गिरि से शिव पायी।
अन्त सुपार्श्वचंद चारण ऋषि, पुनि ये ऋद्धि न आयी।।5।।

प्रज्ञा श्रमण वज्रयश अंतिम, अवधि ज्ञानि श्रीनामा[2]।
मुकुट धरों में चंद्रगुप्त मुनि, अंतिम हैं सुखधामा।।
नंदी[2] नंदिमित्र[3] अपराजित[4], गोवर्धन[5] गुरुवर्ये।
भद्रबाहू[6] ये पण[3] श्रुतकेवलि, सौ वर्षों में हूये।।6।।

मुनिविशाख[1] प्रोष्ठिल[2] क्षत्रिय[3] जय[4] नाग[5] सिद्धारथ[6] मुनि छह।
धृतीषेण[7] सु विजय[8] बुद्धिल[9] गंगदेव[10] सुधर्म[11] ये ग्यारह।।
इक सौ त्र्यासी वर्ष मध्य, ये दशपूर्वी मुनि माने।
दो सौ बीस वर्ष में ग्यारह, अंग धारि गुरु माने।।7।।

वे नक्षत्र[1] जयपाल[2] पांडु[3] ध्रुवसेन[4] कंसमुनि[5] जाने।
पुनि सुभद्र[1] यशभद्र[2] यशो, बाहु[3] लोहार्य[4] बखाने।।
आचारांग धारि ये इक [4]सौ, अठरह बरस सुमध्ये।
गौतम गुरु से लोहाचार्य तक छह सौ त्र्यासि बरस ये।।8।।

1. आदिपु. पृ. 592, पर्व 24। 2. स्त्रीनाम के मुनिराज। 3. ये पाँच। 4.683 वर्ष तक गौतम स्वामी से लेकर लोहार्य मुनि तक हुए है।

नंतर[1] बीस हजार तीन, सौ सत्रह वर्ष पर्यंते।
धर्म प्रवर्तन कारण यह, श्रुत तीर्थ चले शिवपंथे।।
गुरु लोहार्य के कुछ दिन, नंतर अर्हद्बलि यति हूये।
माघनंदि धरसेन पुष्पदंत, भूतबली गुरु हूये।।9।।

गुरु धरसेन द्वितीय पूर्व के, तनिक अंश के ज्ञानी।
उभय साधु को ज्ञानदान दे, किया अक्षुण्ण जिनवाणी।।
उभय शिष्य ने षट्खंडागम, सूत्र रचा श्रुत रुचि से।
श्रुतपंचमि तिथि पूज्य हुई उस, श्रुत की पूर्ति निमित से।।10।।

गुणधरयति ने कसायपाहुड़, रच उपकार किया है।
कुंदकुंद ने चौरासी पाहुड़, श्रुतसार दिया है।।
गुरु यतिवृषभ उमास्वामी मुनि, समंतभद्र अकलंका।
वीरसेन जिनसेन [2]अमृतशशि, प्रभृति हुये श्रुतवंता।।11।।

गुरु संतति में चारित चक्री, शांतिसागराचार्या।
पट्ट शिष्य गुरु वीरसागरा, आदि अनेकाचार्या।।
इस विधि अविच्छिन्न मुनिस्रङ्[3] में वीरांगज मुनि होंगे।
कल्की को कर[4] प्रथम ग्रास, दे अवधिज्ञानी होंगे।।12।।

सर्वश्री आर्यिका अग्निदत, श्रावक पंगुश्री महिला[5]।
चउविध संघ समाधी लेकर, स्वर्ग लहेंगे पहला।।
असुर कुमार देव आकर, यहं कल्की को मारेंगे।
धर्म, नृपति, अग्नी, उस ही, दिन तीनों नश जावेंगे।।13।।

तीन वर्ष साढ़े अठ महीने, बाद काल छट्ठा हो।
त्रेसठ सहस वर्ष नंतर पुनि, मोक्षमार्ग अच्छा हो।।

---

1. पूर्व के 683 और 20317 जोड़ने से इक्कीस हजार होता है। यह पंचमकाल भी इक्कीस हजार वर्ष का है। इसमें 683 + 20317 = 21000 वर्ष तक यह जैनधर्म अविच्छिन्न चलता ही रहेगा, मुनि आर्यिका होते ही रहेगें। 2. अमृतचंद्रसूरि। 3. मुनिमाला में 4. टैक्स। 5. श्राविका।

उत्सर्पिणि के प्रथम तीर्थकर, महापद्म प्रभु होंगे।
उनको शतशत नमन हमारा, शिवपथ दर्शक होंगे।।14।।

जय जय तीर्थकाल की जय हो, जैन धर्म की जय हो।
जय जय केवलि, श्रुतकेवलि की, सब मुनिगण की जय हो।।
जय जय सर्व आर्यिका की जय, चउविध संघ की जय हो।
जय जय जिनशासन की जय, हो मोक्षमार्ग की जय हो।।15।।

–दोहा–

तीर्थ प्रवर्तन काल यह, जिनशासन सुखकार।
ज्ञानमती कैवल्य हितु, नमूँ अनंतों बार।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरतीर्थप्रवर्तनकालकेवलिश्रुतकेवलि-आचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जिनतीर्थ प्रवर्तन काल मध्य, केवलि श्रुतकेवलि वंदन है।
इस मध्य हुये होंगे मुनि जो, उनकी भक्ती शिवसाधन है।।
जो इनका अर्चन करते हैं, वे रत्नत्रय निधि पाते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति पाकर के, क्रम से सिद्धालय जाते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–शंभु छंद–

श्रीशांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, श्री अर जिनवर को नित्य नमूँ।
श्री ऋषभदेव से महावीर तक, चौबीस जिनवर को प्रणमूँ।।
श्री सरस्वती माँ को वंदूं, श्री गौतमगणधर को प्रणमूँ।
आचार्य उपाध्याय साधु परम–गुरुओं को पुनः पुनः प्रणमूँ।।1।।

श्री मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय सरस्वति गच्छ कहा।
विख्यात बलात्कारगण से, गुरु परंपरा से मान्य रहा।।
इसमें अगणित आचार्य हुये, इन सबको वंदन मेरा है।
सब परम्परा सूरी–मुनि को, नित प्रति अभिनंदन मेरा है।।2।।

बीसवीं सदी में प्रथम सूरि, चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर।
श्री शांतिसागराचार्य हुये, उन पट्टाचार्य वीरसागर।।
इनसे महाव्रत दीक्षा लेकर, मैं नाम 'ज्ञानमति' प्राप्त किया।
जिनदेव शास्त्र गुरु की भक्ति, से ज्ञानामृत का लाभ लिया।।3।।

अनुबद्ध केवली, मुक्ति प्राप्त, पंचानुत्तर पाते मुनिवर।
सौधर्मादिक ग्रैवेयक तक, पाकर के आगे शिवतिय वर।।
इन सब ऋषिगण को वंदन कर, मैं स्वपर भेद विज्ञान चहूँ।
इन सब का स्तवन कर करके पर की चिंता से मुक्त रहूँ।।4।।

अनुबद्ध केवली विधान की, यह रचना सब जन सुखकारी।
यह गणिनी ज्ञानमती विरचित, सुंदर विधान मंगलकारी।।
जब तक जग में जिनधर्म रहे, मुक्ती पथ जन जन हितकारी।
तब तक विधान स्थायि रहे, कैवल्य ज्ञानमति होने तक।।5।।

।।इति अनुबद्धकेवली विधानं सम्पूर्णम्।।

।।इति शं भूयात्।।

आरती केवली विधान की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज—ले के पहला प्यार..............

जय जय केवलि भगवान, जो अनुबद्ध हुए हैं महान,
इनकी आरति से पाएंगे हम श्री श्रुतज्ञान।।टेक.।।
ऋषभदेव प्रभु से लेकर महावीर जिनवर तक।
चौबीसों तीर्थंकर के समवसरण होते सुखप्रद।।
उनमें बारह सभा महान, बैठे गणधर मुनी प्रधान,
इनकी आरति से पाएंगे हम श्री श्रुतज्ञान।।1।।
निर्वाण तीर्थंकर का होता है जिस दिन।
केवलि भी बन जाते हैं कोई मुनि उस दिन।।
यही श्रृंखला चले महान, है अनुबद्ध केवली नाम,
इनकी आरति से पाएंगे हम श्री श्रुतज्ञान।।2।।
अनुबद्ध केवलियों की, आरती सजाई है।
पूजा विधान करके, खुशियाँ मनाई है।।
करे ''चन्दनामति'' गुणमान, प्रभु भक्ती का पुण्य महान,
इनकी आरति से पाएंगे हम श्री श्रुतज्ञान।।3।।